ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-7* October-2020
Anthology : The Research

आलोच्य काल से पूर्व नारी की स्थिति

Female Status Before The Reporting Period

Paper Submission: 12/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

रश्मि रंजन सिन्हा
पूर्व शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
भूपेंद्र नारायण मंडल
विश्वविद्यालय, लालू नगर,
मधेपुरा बिहार, भारत

सारांश

नारी ने अपने नारीत्व से इस विश्व को जितना दिया है, अपने जिस प्रेम, ममता, करुणा, समर्पण, सहनशीलता आदि गुणों को दूसरों के लिए जितना निछावर किया है, उसका समुचित फल उसे कभी नहीं मिला। युग – युग से अपने उलझन भरे जीवन का समाधान खोजती नारी आज सिर्फ पुरुषों के लिए ही नहीं, बल्कि खुद के लिए भी एक जटिल पहेली बन चुकी है। अतीत के उतार–चढ़ाव में अंकित नारी का इतिहास धूमिल जरूर रहा है, लेकिन अस्तित्वविहीन नहीं।

As much as the woman has given to this world through her femininity, the qualities of love, affection, compassion, dedication, tolerance, etc. she has given to others, she never received the proper results. A woman seeking a solution to her confused life from era to era has become a complex puzzle not only for men, but also for herself. The history of the woman mentioned in the ups and downs of the past has been bleak, but not non-existent.

मुख्य शब्द : प्रेरणा, गृहस्थी, जननी,मातृदेवी, मातृसत्तात्मक, वंश, लोकोक्तियां, फैमिली, दासी, इतिहासकार
Prerna, Householder, Mother, Mother Goddess, Matriarchal, Dynasty, Folklore, Family, Maid, Historian.

प्रस्तावना

सृष्टि के उषाकाल से लेकर सिर्फ और सिर्फ नारी ही नर के जीवन को पुष्पित और पल्लवित करती रही है। यह भी सच है कि संघर्ष पुरुष की जीवन प्रेरणा रहा है और नारी का आत्मसमर्पण ही उसकी जीवन शक्ति का प्रमाण। लेकिन सामाजिक इतिहास बताता है कि पुरुष की प्रगति के पीछे किसी ना किसी रूप में नारी विद्यमान रही है। माता, पत्नी, बहन, पुत्री, प्रेयसी आदि रूपों में वह पुरुषों की प्रेरणा निश्चय ही बनी है। महादेवी वर्मा कहती है दृ " नारी का मानसिक विकास पुरुषों के मानसिक विकास से अधिक द्रुत गति से होता है। उसके स्वभाव में अधिक कोमल, प्रेम, घृणादी, भाव अधिक तीव्र तथा स्थायी होते हैं। इन दोनों प्रकृतियों में उतना ही अंतर होता है जितना विद्युत और झड़ी में। एक से शक्ति उत्पन्न की जा सकती है, परंतु प्यास नहीं बुझाई जा सकती। दूसरी से शांति मिलती है, परंतु पशुबल की उत्पत्ति संभव नहीं।[1]
आदिम युग की गृहस्थी की शुरुआत भी नारी के कोमल कर – कमलों द्वारा ही हुआ, पुरुषों की कठोरता से नहीं। महादेवी वर्मा का मानना है – पुरुष को यदि ऐसे वृक्ष की उपमा दी जाए जो अपने चारों ओर के छोटे–छोटे पौधों का जीवन रस चूस – चूस कर आकाश की ओर बढ़ता जाता है, तो स्त्री को ऐसी लता कहना होगा, जो पृथ्वी से बहुत थोड़ा सा स्थान लेकर अपनी सघनता में बहुत से अंकुरों की पनपती हुई उस वृक्ष की विशालता को चारों ओर से ढँक लेती है। प्रकृति ने केवल उसके शरीर को ही अधिक सुकुमार नहीं बनाया, वरन उसे मनुष्य की जननी का पद देकर उसके हृदय में अधिक संवेदना, आंखों में अधिक आद्रता तथा स्वभाव में अधिक कोमलता भर दी।"[2]

प्रागैतिहासिक कालीन नारी के संबंध में निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। फिर भी भिन्न–भिन्न स्थानों पर मिले अवशेषों, वस्तुओं पर मिले चिन्ह आदि के आधार पर प्रागैतिहासिक युगीन नारी की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। शशिभूषण दास गुप्ता के शब्दों में – प्रागैतिहासिक काल में नारी की स्थिति पुरुषों से अच्छी थी, यह मातृदेवी की उपासना से अनुमानित किया जा सकता है । इसी आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि वह समाज पितृसत्तात्मक ना होकर मातृसत्तात्मक रहा होगा।[3]

वाहिद प्रवीण ने लिखा है – प्रारंभिक समाज के सभी रूपों में वंश माता के नाम से ही चलता था, क्योंकि सामूहिक विवाह प्रथा में अकेली माता ही निश्चित रूप से पहचानी जा सकती थी।[4]

कुछ विद्वानों का यह भी अनुमान है कि उस काल में विवाह नामक संस्था का अभाव था।[5]

पुरुष धीरे–धीरे अपनी शौर्य शक्ति, कठोरता आदि के बल पर संपत्ति के स्वामी होते गये, जो समाज परिवर्तन का कारण बना।

जो भी हो जब से मानव समाज पितृसत्तात्मक बना है, तब से नारी की स्थिति दयनीय हो रही है। लगभग सभी युगों में पुरुष–रूपी सूत्रधार ने नारी को अपने अधीन रख इशारों पर नचाया है। संपूर्ण विश्व में बहुत ढूंढने पर भी शायद कोई कोना नहीं मिलेगा, जहां पुरुषों ने नारियों पर अत्याचार ना किया हो और नारियों ने पुरुषों की बर्बरता को ना सहा हो। नारी निर्बलता के कारण ही यूरोप में कहा गया कि – स्त्री और गाय की आत्मा नहीं होती। भिन्न–भिन्न देशों में नारी के प्रति अलग–अलग लोकोक्तियां प्रचलित हो गई। जैसे जर्मन में यह कहावत चलपरी की निकृष्टतम लड़का श्रेष्ठतम स्त्री से अच्छा होता है, तो चीन में ये लोकोक्ति प्रचलित हो गई कि गधा और नारी पीटने के लिए होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

नारी के संघर्ष भरे यात्रा के उद्देश्य को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है, मैं अपनी भावनाओं को इन चंद पंक्तियों में बांधने की कोशिश कर रही हूं–

जिंदगी से ऊब गई मैं,
जब देखा हर मोड़ पर संघर्ष का अंबार है ।
सोचा यह जिंदगी नीरस
और बेकार है।
देख बसंत को
पूछा मैंने
भाई बसंत
तेरी मदमस्त खुशी का राज क्या है?
उसने बड़ी गंभीरता से कहा
जराझुक कर देख मेरी इमारत भी
पतझड़ की बुनियाद पर है ।

विषयवस्तु

रूस में तो नारी को घर के चारदीवारी के अंदर ही रहना पड़ता था । हिन्दी में अभी प्रयोग हो रहे परिवार शब्द को अंग्रेजी में "फैमिली" कहते हैं। "फैमिली" शब्द रोमन भाषा का है। रोमन भाषा में "फैमिलुस" का अर्थ गृहदास होता है। इस शब्द का बहुवचन फैमिलिया है, जिसका अर्थ होता है एक व्यक्ति के दासी का समूह। इस शब्द से स्पष्ट संकेत मिलता है कि रोमन में उस समय नारी की स्थिति गृहदासी की ही थी। 11वीं शताब्दी में जब भारत के मंदिरों में देवदासियों की संख्या बढ़ रही थी, उसी समय रोमन कैथोलिक चर्च में भी प्रभु ईसा की दुल्हनों का भी संग्रह किया जा रहा था।

दार्शनिक एवं विचारको ने भी नारी के प्रति न्याय नहीं किया, जबकि इन महानुभावों ने समाज को कई नई व्यवस्थाएं प्रदान की है। यूनान के सुकरात अरस्तु , डिमस्थानिज आदि ने भी नारी का तिरस्कार ही किया। अफलातून ने नारी को नौकर का दर्जा दिया।[6] कन्फ्यूशियस ने उसे मनु की भांति पुरुषों के वश में रहने की व्यवस्था दी।[7] अरस्तू ने तो खरीदी हुई दासी से भी अधिक तत्परता से पति आज्ञा मानने के लिए कहा।[8] मोहम्मद ने नारी को पुरुषों के लिए बनाई गई सबसे बड़ी मुसीबत बताया।[9] ईसा मसीह भी नारी को धर्म – कार्य में बाधक मानते थे। रूसो तथा मिल्टन ने भी नारी को बंधन में रखना जरूरी बताया था । सेंट अगस्टाइन जैसे संत ने भी यह महसूस किया कि नारी पुरुष के लिए सबसे बड़ी बाधा है।

यूनान एवं चीन में नारियों को मंदिर में पूजा करने की अनुमति नहीं थी। यूनान में उसे नौकरानी समझा जाता था। ईसाई धर्म में प्रार्थना ही शुरू होती थी कि – हे भगवान मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं कि तुमने मुझे नारी नहीं बनाया। इस्लाम धर्म के हजरत मोहम्मद ने भी नारियों को नमाज पढ़ने का अधिकार नहीं प्रदान किया। नारी पर अन्याय की पराकाष्ठा तब देखी जा सकती है जब मध्य युग में चर्च में गीत गाने के लिए हिजड़े जा सकते थे लेकिन नारियां नहीं। अर्थात नारी को हिजड़ों से भी कम आंका जाता था।

पुरुषों ने कानून व्यवस्था और समाज व्यवस्था अपने हाथ में रखकर नारी के लिए मनमाने नियम एवं दंड की व्यवस्था की। पुरुषों को जिस गलती के लिए माफी थी, उसी अपराध के लिए नारियों के लिए कठोरतम दंड का विधान था। जापानी पुरुष अपनी इच्छानुसार जितनी चाहे उतनी रखैल रख सकते थे। रोमन के कानून ने पति को यह अधिकार दे रखा था कि वह वह व्याभिचारिणी पत्नी को देखते ही मार डाले। सिर्फ इतना ही नहीं मोहम्मद से पहले अरब ने भी पति को यह अधिकार दे रखा था कि वह व्याभिचारि पत्नी को पत्थरों से मार – मार कर मार डाले। यूनान, जर्मन तथा इंग्लैंड में भी व्याभिचारि नारियों को पुरुषों के द्वारा मार देने का प्रावधान था। प्रारंभिक आर्य जातियों में भी पत्नी का व्यभिचारी होना भयंकर अपराध माना जाता था। मंगोल शासकों के मरने के बाद कब्र में उनके साथ उनकी दासियों को भी गाड़ दिया जाता था । यह रहस्य मिग सम्राट के मकबरे की खुदाई के दौरान अभी अभी खुला है।[10]

नारी के जिस अपराध के लिए पुरुषों ने कठोर दंड बनाएं उसी अपराध के लिए स्वयं को दंडित करना उचित नहीं समझा। अपनी वासना की तृप्ति के लिए जिन नारियों का इस्तेमाल किया, जिसका जीवन तबाह किया, उसे ही वेश्या और कलूटा भी कहा। इतिहासकार स्ट्रबो तथा यूनानी इतिहासकार हेरोड़ेट्स ने भी बेबीलोन की वेश्यावृत्ति का विस्तारपूर्वक वर्णन अपनी–अपनी कृति में किया है। इतिहासकार फोर्टियस जो सिकंदर महान के मित्र भी थे बेबीलोन के पुरुषों के लिए पैसा लेकर अपनी पुत्री और पत्नी को दूसरे पुरुष को सौंपने की बात कही है। अतिथियों के घर आने पर रात्रि शयन के लिए पत्नी, पुत्री आदि को अतिथि के कक्ष में भेज कर उनका आतिथ्य सत्कार करते थे। रोम, मिश्र, इराक, ईरान, टर्की

तथा फिलिस्तीन तक में वेश्यावृत्ति एक महामारी की तरफ फैली हुई थी। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व जापान में सरकार स्वयं वेश्यालयओं की देख–रेख करती थी। यहूदियों के ग्रंथ जेनेसिस में भी वेश्यावृत्ति का वर्णन मिलता है।

पुरुषों ने केवल अपनी पत्नी को ही यातनाएं दी हो अथवा बालाओं को वेश्या बनाकर जिंदगी के अंधेरे गर्त में धकेल दिया हो बात सिर्फ इतनी सी निर्ममता का नहीं है, वे अपनी नवजात कन्या को जन्मते ही मार डालते थे। मेक्सिको के निवासी तो अपने देवता के सामने कन्या की हत्या कर वध का नाम देते थे। कुरैश के लोग भी मक्का के पास अबू दिलाया पहाड़ पर अपनी कन्याओं का वध कर देते थे।[11] रूस में भी नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी। वहां कोड़े लगाकर वर–वधू को घर ले जाया जाता था और वधु को जूते खोलने के लिए कहता था। उस जूते में से एक कीड़ा मिलता था।[12] नारी को पीटने का अधिकार मध्ययुगीन, यूरोप, रोम तथा आस्ट्रेलिया में भी पुरुषों को प्राप्त था। फिरंगी में नारी को कुत्तों से भी अधिक अपवित्र माना जाता था तथा पत्नी को पेड़ से बांधकर पीटना पतियों का मनोरंजन था।[13] मध्यकालीन इंग्लैंड का कानून तो नमक तथा सिरके में भीगी मजबूत छड़ी से नारी पीटने का अधिकार पुरुषों को देता था।[14]

एस्किमो की तरह ही रैडस्किन,ऑस्ट्रेलियन, वश्मैन और यूमाजति के पति भी अपनी पत्नी, अपने मित्रों को उधार और किराए पर देते थे। अमेरिका की छिनक जाति के पुरुष भी अपनी कन्या, पत्नी या अपने परिवार को अन्य नारी को अतिथि की शैय्या पर भेजते थे। प्लूटार्क ने रोम तथा यूनान के प्रसिद्ध पुरुषों द्वारा दूसरे पुरुष को पत्नी सौंपने का उल्लेख किया है। ऐसा भी कहा जाता है कि महादार्शनिक सुकरात ने भी अपनी पत्नी जैनटीपी को अपने मित्र अलसीबीएडीज को उधार पर सौंप दिया था ।

नारियों का क्रय– विक्रय केवल असभ्य अवस्था में ही पुरुषों द्वारा होता हो, ऐसा नहीं है। सभ्य कहे जाने वाले देश के सभ्य समाज में भी यह काम धड़ल्ले से होता था। यूरोप में तो 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक पत्नी विक्रय का अधिकार पतियों के पास था। ग्रीम ने इंग्लैंड में 1828 तक खुलेआम पत्नी विक्रय की बात स्वीकारी है, और अमेरिका में तो 1850 तक नारी को नागरिक ही नहीं माना जाता था ।

इस तरह उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि विश्व फलक पर नारी की परिस्थिति क्या थी? जिस नारी ने ममता, स्नेह, सहयोग आदि ही नहीं न्योछावर किया, बल्कि सृष्टि संचालन के लिए संतान भी प्रदान किए, उसी के साथ पुरुषों ने बद से बदतर व्यवहार किया। उसे हमेशा अपने जुल्मी शिकंजे में कस कर रखा। पुरुष अपने पौरूष के अहं पूर्ण व्यवहार में यह भूल गया कि नारी भी मानव ही है, उसे भी सुख–दुख की अनुभूति होती है, उसकी भी भावनाएं होती हैं। नारी को निर्बल समझकर हमेशा पूरे विश्व के पुरुषों ने तरह–तरह के हथकंडे अपनाकर उसे प्रताड़ित किया है।

निष्कर्ष

नारी भले ही प्रत्येक युग में विश्व के हर कोने में प्रताड़ित होती रही हो, लेकिन नारी ने कभी भी अपना विश्वास नहीं खोया है। इसी विश्वास की शक्ति पर वह संघर्ष करती हुई आज अपनी स्थिति को दिन–प्रतिदिन सुदृढ़ करती जा रही है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्रृंखला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, पृ०–11–12*
2. *वही, पृ०– 92 93*
3. *इवोल्यूशन ऑफ मदर वरशिप इन इंडिया, शशि भूषण दास गुप्ता, ग्रेट विमेन ऑफ इंडिया में संग्रहीत*
4. *नारी, विवाह और सदाचार, वाहिद प्रवीन(अनुव आनंद प्रकाश जैन), पृ०– 2, 4*
5. *पोजिशन ऑफ विमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन एव एस अल्टेकर पृ०–35*
6. *रिपब्लिक– 4ध431*
7. *चाइनीज क्लासिक लेगी, 2/103 पृ०*
8. *इकनॉमिका, 117*
9. *स्पीचेज ऑफ मोहम्मद लेन, पृ०–161,163*
10. *नारी और समाज, चिवलाव पाराशर, पृ०–298*
11. *नारी का मूल्य, शरत चंद चट्टोपाध्याय,–77*
12. *मॉडर्न कस्टम्स एंड एन्सिएंट लॉज ऑफ एशिया , कोवल्स्की,पृ०–44*
13. *फिजी एंड दी फिजियन्स , विलियम्ज, पृ०–156*
14. *हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न कल्चर, स्मिथ, पृ०–520*